International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925, Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 01(II), January- March, 2025, pp. 200-202

नृत्य में लय

दीक्षा साहू*
प्रो. ईना शास्त्री**

सार

जीवन के प्रत्येक स्तर पर लय का विशेष स्थान होता है। मानव शरीर की गतिविधियाँ भी एक निश्चित लय में संचालित होती हैं, जो व्यक्तिगत जीवन शैली को प्रभावित करती हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में लय, नृत्य और संगीत के आपसी संबंधों को स्पष्ट किया गया है। नृत्य और संगीत में भी लय का अत्यधिक महत्व है। प्रस्तुत लेख संगीत में प्रयुक्त होने वाली महत्वपूर्ण पक्ष लय की सार्थकता को सिद्ध करने का प्रयास करता है। पंडित बिरजू महाराज जी ने अपने आस–पास के वास्तविक परिदृश्य से जोड़ते हुए नृत्य का वर्णन इस प्रकार किया है– प्रकृति में भी एक स्वभाविक लय मौजूद होती है। यह लेख केवल संगीत तक सीमित नहीं है, बल्कि यह संपूर्ण ब्रह्मांड में विद्यमान है। लय नृत्य की आत्मा है, जो नृत्य को जीवित रखती है। लय के बिना नृत्य एक मृत शरीर के समान होता है।

शब्दकोशः *संगीत, नृत्य, ताल, लय, ब्रह्मांड, मूर्तिकला, चित्रकला।*

प्रस्तावना

लय ही कला का आरंभ है और लय ही कला अंत है। लय ही सबका यथार्थ है और लय ही संवेग भी। लय परिवर्तन है, ज्ञान है, अध्यात्म है, विकास, संतुलन और सौंदर्य है। सत्यं, शिवम्, सुंदरम् का लयपूर्ण एकीकरण ही जीवन की सच्ची अभिव्यक्ति है। नृत्य में लय ही इस प्रारंभ का अस्तित्व, अन्त बनाए रखती है, नृत्य की लय गणित, योग, विज्ञान, अध्यात्म इत्यादि जीवन के महत्वपूर्ण तथ्यों के लिए चलती है। संसार की समस्त कलाएँ (संगीतकला, मूर्तिकला, चित्रकला इत्यादि) लय की प्रधानता लिए हुए है, किंतु भारतीय संगीत में ताल व लय दोनों की प्रधानता रहती है। संसार की सभी गतिविधियों में लयात्मकता होती है। समस्त प्राकृतिक क्रियाएँ जैसे– सूर्य–चंद्रमा का उदय अस्त होना, ऋतुओं का परिवर्तित होना, पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा इत्यादि क्रियाओं में एक विशिष्ट लय है। लय जीवन के प्रत्येक पहलू में विद्यमान है। शरीर में हृदय में गति का समान रूप से चलना स्वस्थ होने का प्रमाण है परंतु इस लय में जरा सी रूकावट या असमानता हमारे शरीर को असंतुलित (अस्वस्थ) कर देती है इसलिए लय को संतुलन का कारक कहा जा सकता है।

''बिरजू महाराज कहते हैं कि प्रकृति में सब ओर लय और समयबद्धता है। हवा के झोंकों पर झूमते पेड़, पहाड़ों के आड़े–तिरछे रास्तों से निकलते झरने, पक्षियों का फड़फड़ा कर उड़ना और चहकना सब में संगीत एवं संगीतबद्धता दृष्टिगोचर होती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि लय प्रकृति के कण–कण में विद्यमान है।

* शोधार्थी (संगीत), वनस्थली विद्यापीठ, निवाई, टोंक, राजस्थान।
** प्रोफेसर (संगीत), वनस्थली विद्यापीठ, निवाई, टोंक, राजस्थान।

प्रत्येक गतिमान वस्तु में 'लय' अवश्य निहित रहती है। लयहीन वस्तु स्थिर रहती है। जब हम चलते हैं तो हम भी किसी न किसी लय में चलते हैं। वह लय तो होती है परंतु 'नियमित' नहीं क्योंकि चलते हमारी चाल कभी धीमी तो कभी तेज हो जाती है। परंतु परेड में 'लय' के जीवंत रूप को देखा जा सकता है। उसमें एक प्रकार का नियम होता है। यह उन्हें सही गतिमान होने व लयबद्ध होने को आग्रह करता है इसलिए समय की नियमित गति को 'लय' कहा जाता है।

यदि संगीत की बात की जाए तो 'लय' और 'नृत्य' संगीत का एक महत्वपूर्ण अंग है। उसकी आत्मा है अतः अभिनय के तीनों अंगों नाट्य, नृत्त और नृत्य में एक तरह से लयपूर्ण विभाजन है। नृत्य पक्ष का अपना शास्त्र है जो संपूर्ण लय पर ही विशेष आधारित है, नाट्य, नृत्त और नृत्य सभी में लय के विशिष्ट सिद्धांत कार्य करते हैं। संगीत में दो मुख्य स्तंभ ताल और लय है। ताल व लय के बिना संगीत की कल्पना ही नहीं की जा सकती। ताल व लय दोनों संगीत के अभिन्न तत्व हैं। इस प्रकार लय और ताल का संबंध स्पष्ट है।

संगीत रत्नाकार के अनुसार ताल शब्द की व्युत्पत्ति –

''तालस्तल प्रतिष्ठायामिति धातोर्धञिस्मृतः।

गीतं वाद्य तथा नृतं यतस्ताले प्रतिष्ठितम्।।

अर्थात् 'तल' धातु में 'धम्' प्रत्यय लगने पर ताल शब्द बनता है। गीत, वाद्य और नृत्य इसी ताल में प्रतिष्ठित हैं। गीत, वाद्य और नृत्य का आधार ताल है। ताल के साथ–साथ लय भी नृत्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समय की समान गति को लय कहते हैं। यही लय मात्राबद्ध हो जाती है तो ताल कहलाती है। इस प्रकार लय असीमित और ताल सीमित व मात्राबद्ध स्वरूप होता है।

''लय शद्ध 'ली' धातु में 'अच्' प्रत्यय लगने से हुई है जिसका अर्थ है 'लीन हो जाना' अर्थात् समरूप हो जाना।'' जिस प्रकार पानी के गिलास चीनी पूरी तरह घुल जाती है वैसे ही संगीत में शब्दों व स्वरों के बीच की गति विलीन हो जाये तो वह संगीत में लय कहलाती है।

संगीत रत्नाकार के अनुसार – **''क्रियान्तर विज्रांति लयः''**

अर्थात् क्रिया के अनंतर या क्रिया के अंत में जो विज्रांति होती है, उसे लय कहते है। एक मात्रा से दूसरी मात्रा में विज्रांति कम या ज्यादा (अधिक) होने पर लय परिवर्तित हो जाती है। नारदीय शिक्षा के अनुसार लय की गति को उस समय वृत्ति कहा जाता था–

''अभ्यासार्थे द्रुतां वृत्तिं प्रयोगार्थे तु मध्यमाम्।

शिष्याणामुपदेशार्थे कुर्याद् वृत्तिं विलंबताम्।।

नृत्य में लय के निर्धारण के लिए हाथों द्वारा ताली दी जाती थी 46 सूत्र में शौनक ने वृत्ति (लय) का वर्णन किया।

''तिस्त्रो वृत्तीरूपदिशंति वाचो विलंबिता मध्यमा च द्रुतां च।

वृत्ति (लय) के तीन प्रकार होते है– विलंबित, मध्य और द्रुत। विलंबित वृत्ति प्रातः मध्यम वृत्ति दिन और द्रुत वृत्ति सायंकाल में याज्ञिक कर्म संपन्न होते है।

विष्णुधर्मोंतर पुराण में रसों की दृष्टि से लय का निर्धारण इस प्रकार किया है– हास्य और श्रृगांर में मध्य लय, विभत्स और भयानक में विलंबित, वीर और रौद्र और अद्भुत में द्रुत। नाट्यशास्त्र में रसनिष्पत्ति की दृष्टि से लय का निर्धारण इस प्रकार किया गया है–

''श्रृंगारहास्ययोर्मध्यलयः। करूणे विलंबितेः। वीररौद्राद्भुतवीभत्स भयानके। द्रुतः।।''

संगीत चूड़ामणि के अनुसार लय– दो मात्राओं के मध्य का अंतराल लय (विश्रांति) के कारण लय कहलाता है। वह लय त्रिविध वृत, मध्य, विलंबित होती है।

''तालान्तरावर्तीयः कालोऽसौ लयन्नाल्लसः।।

त्रिविधः स च विज्ञेयो द्रुतो मध्ये (ध्यो) विलंबिताः।।

अर्थात् 'लय' शब्द का साधारण अर्थ गति है मुख्यतः 'लय' तीन प्रकार की होती है–

- **विलंबित लयः** संगीत कला में जब गायन, वादन तथा नृत्य बहुत धीमी लय में हो अथवा लय की गति बहुत धीमी हो, उसे विलंबित लय कहते हैं।
- **मध्य लयः** जब लय न तो धीमी हो और न ही तेज लय हो अर्थात् साधारण लय को मध्य लय कहते हैं अर्थात् विलंबित लय से दुगुन व द्रुत लय की आधी लय को मध्य लय कहा जाता है।
- **द्रुत लयः** तेज गति की लय द्रुत लय कहलाती है अर्थात् विलंबित लय से चौगुनी और मध्यम लय से दुगुन लय द्रुत लय कहलाती है।

निष्कर्ष

नृत्य में ताल–लय का ज्ञान होना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि ताल लय में निपुण हुए बिना नर्तक नृत्य प्रदर्शन नहीं कर सकता है। आचार्य शारंग देव ने कहा –

''यतो तालं न जानाति न च गायको न च वादकः''

जो ताल को जानने वाला नहीं है वह न तो गायक है और न ही वादक।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पाण्डे, सु. (2012). *ताल–प्राण.* सांस्कृतिक दर्पण. लखनऊ. 225–229.
2. बक्शी, ज्यो. (2000). *कथकः अक्षरों की आरसी.* मध्य प्रदेशः मध्य प्रदेश हिन्दी अकादमी, भोपाल, मध्य प्रदेश. 183–184.
3. रघुवीर, गी. (2000). *कथक के प्राचीन नृत्तांग.* पब्लिकेशन स्कीम, जयपुर. 1.
4. शुक्ला, शि. (2015). *कथक कल आज और कल. कनिष्क पब्लिशर्स, दिल्ली. 196*

❖◆❖